भगवान नित्यानन्द की मूर्ति की पुनर्स्थापना

एक इतिहास और वृत्तान्त

स्वामी वासुदेवानन्द और क्षमा फॅरार द्वारा लिखित

२० सितम्बर, २०१८

श्री मुक्तानन्द आश्रम

जैसा कि कई सिद्धयोगी जानते होंगे, वर्ष २००४ में एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के ट्रस्टीज़ ने एक ऐसी प्रणाली स्थापित की थी जिससे सिद्धयोग पथ, सार्वभौमिक संघम् व नए साधकों के लिए और भी अधिक सुलभ हो सके। इसका अर्थ यह था कि बजाए इसके कि श्री मुक्तानन्द आश्रम, बड़े पैमाने पर आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों हेतु एक ऐसा स्थान बना रहे जहाँ हर रोज़ हज़ारों जिज्ञासुओं व दर्शनार्थियों का आतिथ्य किया जाता है, यह सुनिश्चित किया जा सके कि एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के संसाधनों को शिक्षण एवं अध्ययन कार्यक्रमों के निर्माण पर केन्द्रित किया जाए और उन कार्यक्रमों को लोगों के घर-घर तक तक पहुँचाया जाए।

इस संसार में जब भी कोई ऐसा महत्त्वपूर्ण और बड़ा निर्णय लिया जाता है तो वह एक परिवर्तन का समय होता है। इस प्रणाली के विषय में भी यह परिवर्तन का समय था, श्री मुक्तानन्द आश्रम के लिए भी और विश्वभर के सिद्धयोग विद्यार्थियों के लिए भी। जो लोग नियमित रूप से श्री मुक्तानन्द आश्रम आकर सभी सिद्धयोग अभ्यासों में भाग लेने और सेवा अर्पित करने के अभ्यस्त हो गए थे, उन्हें एक बार पुनः यह विचार करना था कि वे किस प्रकार सिद्धयोग साधना के साथ अपने सम्बन्ध को, अपने जुड़ाव को बनाए रख सकते हैं। कई लोग यह मानते थे कि श्री मुक्तानन्द आश्रम की यात्रा उनकी साधना में नवजीवन का संचार करने का माध्यम है। इसीलिए, जब यह प्रणाली लागू की गई तो इसे कई अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ मिलीं।

यद्यपि, इस प्रणाली का यह आशय बिल्कुल नहीं था कि श्री मुक्तानन्द आश्रम के द्वार बन्द कर दिए जाएँ, परन्तु ऐसा प्रतीत हुआ कि कुछ लोगों में यह ग़लतफ़हमी हो गई कि यह प्रणाली इसी बारे में है। परन्तु ऐसा नहीं था। हम इस समय आपको यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि आश्रम कभी भी बन्द नहीं था और न ही कभी बन्द किया गया। बल्कि, इस प्रणाली द्वारा, एक ऐसी कार्य-व्यवस्था को स्थापित किया

गया जिसके माध्यम से लोग श्री मुक्तानन्द आश्रम में सेवा अर्पित करने हेतु अपनी रुचि, कौशल व योग्यताएँ व्यक्त कर सकते हैं। इस तरह वे एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के मूल उद्देश्य को पूरा करने में अपना योगदान दे सकते हैं जो है : सिद्धयोग की सिखावनियों को सुरक्षित रखना, उनका परिरक्षण करना और उन्हें प्रसारित करने में मदद करना।

सिद्धयोगी इस नई दिशा को समझ सकें इसके लिए 'सिद्धयोग मिशन ब्रीफिंग' की रचना की गई और उसे हज़ारों लोगों को उपलब्ध कराया गया। व्यक्तिगत तौर पर मीटिंग्स करके, फ़ोन-कॉल्स पर, तथा ऑडिओ प्रेज़ेन्टेशन्स द्वारा और साथ ही, बाद में सिद्धयोग पथ की वेबसाइट द्वारा भी यह ब्रीफिंग उपलब्ध कराई गई। एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के स्टाफ़ के सदस्य और विश्वभर के सेवाकर्ताओं ने इसे कार्यान्वित करने हेतु बहुत कार्य किया और आगे आकर अपना सहयोग प्रदान किया। उन्होंने सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् को, एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के उद्देश्य और श्री मुक्तानन्द आश्रम में चल रहे कार्यों के विषय में स्पष्ट रूप से समझाने में अपना सहयोग प्रदान किया। कुछ ही समय में, एक बड़ी संख्या में सिद्धयोगी इस उद्देश्य को समझ चुके थे तथा अपनी सेवा अर्पित करने लगे थे ताकि सिद्धयोग पथ पूरे विश्व में सुलभ हो सके। इतने सारे लोगों की वचनबद्धता, समर्पण और विद्यार्थित्व के कारण ही एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन इस प्रणाली के लक्ष्य को प्राप्त कर सका है।

प्रणाली लागू होने के बाद, परिवर्तन के दौरान श्री मुक्तानन्द आश्रम में मानव-संसाधनों को उचित रूप से आवश्यकतानुसार कम किया गया और आश्रम के भौतिक क्षेत्रों में भी बदलाव किए गए ताकि वे इस नए केन्द्रण के अनुकूल हो सकें।

सभी कार्यालय, आश्रम की एक बिल्डिंग, 'आत्मनिधि' में साथ लाए गए जिसका अर्थ होता है, "दिव्य आत्मा का खज़ाना।" और एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के संचालकों ने एक संयुक्त प्रयास के द्वारा स्टाफ़ को यह सीखने में सहयोग किया कि वे किस प्रकार दीर्घकालीन सेवा अर्पित करते हुए भी अपनी दिनचर्या में सिद्धयोग अभ्यासों को सम्मिलित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, संचालकों ने एक कार्यप्रणाली बनाई जिसके अनुसार प्रत्येक सेवाकर्ता हर सप्ताह आश्रम दैनिक-कार्यक्रम के अन्तर्गत, नामसंकीर्तन व स्वाध्याय के कुछ निश्चित सत्रों में भाग लेने हेतु वचनबद्ध रहेगा।

यही वह समय था जब श्री मुक्तानन्द आश्रम के प्रबन्धन ने आत्मनिधि में भगवान नित्यानन्द की एक छोटी मूर्ति की स्थापना करने का निश्चय किया। इससे यहाँ इस बिल्डिंग में सेवा अर्पित कर रहे सेवाकर्ता, रोज़ बड़े बाबा के दर्शन कर सकते थे और इस प्रकार वे आश्रम में सेवा अर्पित करने के अपने उद्देश्य के साथ पुनः जुड़ पाते थे। बड़े बाबा की सिखावनी है, "सभी पवित्र तीर्थों का केन्द्र हृदय है,

वहाँ जाओ और वहीं रमण करो।" क्या यह सच नहीं है? जब आप बड़े बाबा के दर्शन करते हैं, तो ऐसा हो ही नहीं सकता कि आप वहाँ *न* जाएँ, भगवान के मन्दिर में *न* जाएँ!

नई प्रणाली आरम्भ होने और संसाधनों को उचित रूप से आवश्यकतानुसार कम किए जाने के सात वर्षों बाद, अब हम वर्ष २०११ पर आते हैं। जब गुरुमाई जी को ज्ञात हुआ कि २०११ बड़े बाबा की पुण्यतिथि का स्वर्ण-जयन्ती वर्ष है तो उन्होंने पूछा कि इस पचासवीं वर्षगाँठ को मनाने का सर्वोत्तम तरीक़ा क्या हो सकता है जिससे इस महोत्सव में सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् सम्मिलित हो सके। एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के संचालकों ने उत्तर दिया कि "सभी को सम्मिलित करने का सबसे उत्तम तरीक़ा है, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट।"

इसलिए, गुरुमाई जी ने एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के सेवाकर्ताओं से कहा कि वे सिद्धयोग पथ की वेबसाइट को पुनर्नवीन करें जो १९९७ से चल रही है। और हमें आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि सिद्धयोग पथ की वेबसाइट ने वर्ष २००४ में स्थापित प्रणाली के मूल उद्देश्य को कितने असाधारण रूप से पूरा किया है। फिर भी हम एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम का ज़िक्र करने से खुद को रोक नहीं पा रहे हैं : वर्ष २०१३ में आयोजित सबसे पहला सीधा वीडिओ प्रसारण — भगवान नित्यानन्द का महा-अभिषेक!

पुनः नवीन रूप में, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट के दोबारा आरम्भ होने के साथ ही श्रीगुरुमाई ने उस स्थान को "सिद्धयोग वैश्विक हॉल" का नाम दिया जहाँ पर विश्व के सभी भागों में रह रहे सिद्धयोगी और नए साधक, शिक्षण एवं अध्ययन कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए एक संघम् के रूप में एकत्रित होते हैं। इनमें से कई कार्यक्रम श्री निलय से प्रसारित किए गए हैं और यही कारण है कि श्री निलय वैश्विक हॉल बन गया है।

सितम्बर २०१८ में, वेबसाइट के पुनर्नवीन होने के सात वर्ष बाद, श्रीगुरुमाई ने एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के संचालकों से कहा कि वे बड़े बाबा की उपस्थिति को वैश्विक हॉल में ही ले आएँ बजाए इसके कि उनकी मूर्ति हॉल के पास बने छोटे कमरे में स्थापित रहे।

जब गुरुमाई जी ने हाल ही में, श्री निलय में आयोजित एक सत्संग में हमें जल्द ही की जाने वाली इस पुनर्स्थापना के विषय में बताया तो कई लोगों ने इसे लेकर अपनी खुशी और उत्सुकता व्यक्त की। इसके बावजूद भी, यह क्षण एक बार पुनः, परिस्थिति के अनुसार स्वयं को ढालने का था। कोई भी निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता था कि यह परिवर्तन कैसा लगेगा या यह सब कैसे होगा। जैसा कि आप जानते हैं, किसी भी परिवर्तन को सहयोग मिलने में थोड़ा समय तो लगता ही है।

अपने ऊपर श्रीगुरु के शब्दों का प्रभाव होने में, उनका अर्थ समझने में थोड़ा समय लगता है। और फिर धीरे-धीरे, समय के साथ-साथ, आप उस मार्गदर्शन के गहनतर अर्थों का सतत अनुभव करने लगते हैं।

गुरुवार, २० सितम्बर, २०१८ को जब गणेश-उत्सव का आठवाँ दिन था, भगवान नित्यानन्द की मूर्ति श्री निलय में अपने नए पूजा-स्थल में लाई गई। यह उत्कृष्ट पूजावेदी, अत्यन्त सुन्दर तरीक़े से मुड़े हुए वृत्तखण्ड के बीच स्थापित की गई है और इसका मुख श्रीगुरुमाई के आसन की ओर है।

जैसे ही बड़े बाबा श्री निलय में आए और पूजावेदी पर विराजमान हुए, हल्की-हल्की "मयूर-वृष्टि" शुरू हो गई। हमें ऐसा लगा मानो माँ प्रकृति इस मंगलमय बेला में आनन्दित हो रही हैं। हमने अनुभव किया कि बड़े बाबा की स्वर्णिम मुख-मुद्रा और कृपापूर्ण दृष्टि सब ओर व्याप्त हो रही है। यह कितना विस्मयपूर्ण था — हमें लगता था कि श्री निलय का वातावरण पहले से ही अत्यन्त ऊर्जावान था, गुरुमाई जी की उपस्थिति से, सिद्धों की उपस्थिति से और उन सभी सिद्धयोग अभ्यासों से जो यहाँ किए गए थे। हमने कभी यह सोचा ही नहीं था कि वातावरण का हर कण, हर अणु, इस सुमधुर शक्ति से और भी अधिक ओजपूर्ण, और भी अधिक शक्तिपूर्ण हो सकता है। इसने हमें चिन्तन करने के लिए एक विषय दे दिया था : भला शहद, खुद शहद से अधिक मीठा कैसे हो सकता है?

अब हम आपको, समय में *और भी* पीछे की यात्रा पर ले जाना चाहते हैं। यह सैंतालीस वर्ष पुरानी बात है, सन् १९७१ की, जब एक सिद्धयोग आश्रम में भगवान नित्यानन्द की प्रथम मूर्ति प्रतिष्ठापित की गई थी।

१९५० के दशक से, लोग पहले सैकड़ों फिर हज़ारों की संख्या में विश्व के सभी भागों से गुरुदेव सिद्धपीठ आने लगे थे। बाबा मुक्तानन्द गुरुचौक में बैठकर घण्टों तक लोगों को दर्शन व सिखावनियाँ प्रदान करते। इस दौरान, भक्तगण बाबा जी से प्रश्न पूछते, सभी प्रकार की वस्तुओं के लिए प्रार्थना करते और अपनी साधना के अनुभव बाँटते।

और यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बाबा मुक्तानन्द के साथ एक ही अनन्त सत्संग में दिन और वर्ष बीतते चले गए।

१९६० के दशक के अन्त में, अवश्य ही बाबा जी के साथ ऐसे ही एक सत्संग के दौरान कुछ भक्तगणों ने बाबा जी के समक्ष एक विचार रखा। यह समझते हुए कि बाबा जी अपने श्रीगुरु से कितना प्रेम करते हैं, उन्होंने बाबा जी को सुझाव दिया कि पास के गणेशपुरी गाँव में बड़े बाबा जी के समाधि मन्दिर में उनकी मूर्ति की स्थापना की जानी चाहिए। अवश्य ही बाबा जी इस विचार से सहमत हुए होंगे क्योंकि उसके बाद उन्होंने स्वयं व्यक्तिगत रूप से मूर्ति के निर्माण का निरीक्षण किया। हर थोड़े दिनों में

बाबा जी मुम्बई जाते, जहाँ मूर्तिकार रहता था और जाँच करते कि मूर्ति कितनी बनी है और कैसी लग रही है। बीच-बीच में मूर्तिकार भी बाबा जी से पूछता कि क्या उसने बड़े बाबा की मुख-मुद्राओं को सही रूप में दर्शाया है और इस पर बाबा जी कभी-कभी स्वयं ही मूर्ति में सुधार कर दिया करते। मूर्तिकार का कार्य समाप्त होने पर मूर्ति को गुरुदेव सिद्धपीठ लाया गया। प्रतिष्ठापित करने से पूर्व बाबा जी ने स्वयं मूर्ति को और परिष्कृत कर अन्तिम रूप प्रदान किया।

मूर्ति गणेशपुरी गाँव भेजी ही जाने वाली थी कि तभी इस कहानी में एक अनपेक्षित मोड़ आया। भगवान नित्यानन्द के समाधि मन्दिर के ट्रस्टीज़ ने बाबा जी को बताया कि वे ऐसी मूर्ति चाहते हैं जिसमें बड़े बाबा जी एक अलग मुद्रा में बैठे हों। अतः, उन ट्रस्टीज़ ने अपने इस निर्णय के अनुसार कार्य करना आरम्भ कर दिया और इसका अर्थ था कि वे अब इस मूर्ति को बड़े बाबा के समाधि-मन्दिर में स्थापित नहीं करेंगे। यह सभी के लिए अचरज की बात थी, क्योंकि पहले तो ट्रस्टीज़ तैयार थे। तथापि, यह परिवर्तन बाबा जी के उत्साह को कम न कर सका। एक साधक जो गुरुदेव सिद्धपीठ में बचपन से रहे हैं और वहीं बड़े हुए हैं, वे याद करते हुए बताते हैं कि उस समय बाबा जी ने कहा था, "बड़े बाबा इस आश्रम में हमारे साथ रहना चाहते हैं! तो चलो हम उनके लिए एक मन्दिर बनाएँ।"

और संक्षिप्त में कहा जाए तो, ठीक ऐसा ही हुआ! बड़े बाबा को गुरुदेव सिद्धपीठ के मन्दिर में प्रतिष्ठापित करने का अनुष्ठान १० मई, १९७१ को सम्पन्न किया गया। इस ऐतिहासिक अवसर पर बाबा जी ने कहा, "मैं अपनी पूरी सामर्थ्य व अधिकार के साथ कहता हूँ कि यदि तुम गहन भक्तिभाव से इस छवि के दर्शन करोगे, यदि तुम इसके रहस्य के मर्म में डूब जाओगे और इसके नेत्रों में दमकते प्रेम के प्रति, इसके स्वरूप को तेज प्रदान करने वाली दीप्ति के प्रति व इसे चैतन्य बनाने वाले प्रकाश के प्रति संवेदनशील रहोगे तो तुम्हें वास्तव में भगवान नित्यानन्द के सम्पूर्ण वैभव के दर्शन होंगे।" नित्यानन्द — जो शाश्वत आनन्द हैं।

उस समय जो लोग वहाँ उपस्थित थे उनमें से कई लोगों ने बताया कि इस अनुष्ठान के बाद, आश्रम के वातावरण में इसका प्रभाव स्पर्शनीय था; उसे स्पष्टरूप से महसूस किया जा सकता था। ऐसा लग रहा था मानो वातावरण, शक्ति से और भी अधिक स्पन्दित हो रहा है; अन्तर में निमग्न हो जाने का खिंचाव भी अधिकाधिक प्रबल हो गया था। अधिकांश भक्तों ने यह महसूस किया कि आश्रम में भगवान नित्यानन्द की उपस्थिति होने से; उनके देहरूप से बड़ी उनकी मूर्ति के वहाँ होने से अब उनके बीच दो बाबा थे! यानी और अधिक शक्ति।

और अब हम पुनः वर्तमान क्षण में आते हैं : यहाँ श्री मुक्तानन्द आश्रम में, २० सितम्बर, २०१८ को बड़े बाबा का श्री निलय में स्वागत करने के लिए जो सत्संग हुआ था, वह उस प्रथम प्रतिष्ठापना की तरह ही था और उसी का स्मरण करा रहा था। हम सभी, स्टाफ़ के सदस्य और विज़िटिंग सेवाकर्ता, बड़े बाबा के सम्मुख पूर्ण निःस्तब्धता में खड़े थे, कृपा की स्वर्णिम किरणों को स्वयं में समाहित करते हुए, अपने अन्दर आत्मसात् करते हुए जो उनकी सत्ता से सम्पूर्ण स्थान में प्रसरित हो रही थीं।

कुछ क्षणों बाद, हम अपनी इस निमग्नता से बाहर आए, ताकि हम निधि-चौक में तरंगित हो रही गुरुमाई जी की हँसी की ध्वनि का आनन्द ले सकें!

सुबह के दस बजकर पैंतालीस मिनट हुए थे, जब गुरुमाई जी ने श्री निलय में प्रवेश किया; वे बड़े बाबा की नई पूजा-वेदी के पास गईं और उन्हें प्रणाम किया। कुछ क्षणों के लिए, हम सभी ने सम्मान में अपने हाथ जोड़कर नमन किया। फिर हमने देखा कि गुरुमाई जी का ध्यान प्रत्येक पूजा-सामग्री की ओर गया जो पूजा-वेदी के पास की मेजों पर रखी गई थी। ये वे भेंट-सामग्री थीं जो गुरुमाई जी बड़े बाबा को अर्पित करने वाली थीं। ये सभी, स्वामी असंगानन्द के निरीक्षण में सेवाकर्ताओं द्वारा बहुत प्रेम से तैयार की गई थीं। स्वामी असंगानन्द, वर्ष २००६ से बड़े बाबा की दोनों मूर्तियों की देखरेख कर रहे हैं।

भेंट की विभिन्न वस्तुएँ कितनी उत्कृष्ट थीं — कुमकुम, हल्दी, और चन्दन का लेप; अक्षत; सुगन्धित इत्र; भीनी-भीनी खुशबू से महकते गुलाब और सुगन्धित मोगरे की पुष्प-मालाएँ; स्वादिष्ट फलों से भरे कई पात्र और एक नारियल। गुरुमाई जी ने ये भेंट-सामग्री अर्पित करना आरम्भ किया, और हम सभी झिंझोटी राग में 'ॐ नमो भगवते नित्यानन्दाय' संकीर्तन करने लगे, वह राग जो प्रेम और मृदुलता का आवाहन करता है। सिद्धयोग नामसंकीर्तनों के भण्डार में, यह नामसंकीर्तन ऐसा है जिसके अन्दर श्रीगुरु की कृपा व आशीर्वादों को पाने का अनुभव समाहित है — ख़ासकर उन सभी सिद्धयोगियों के लिए जो १९६०, ७० और ८० के दशकों से सिद्धयोग पथ का अनुसरण कर रहे हैं।

बड़े बाबा की पूजा के बाद, गुरुमाई जी ने, सिद्धयोग परम्परा और धरोहर का सम्मान करते हुए बाबा मुक्तानन्द और सभी सिद्धों की छवियों के समक्ष भेंट अर्पित की। हमने सायंप्रातः की आरती के प्रारम्भिक श्लोक गाए और फिर नित्यानन्द आरती की, उनकी स्तुति में जिन्होंने इस वैश्विक हॉल में अपना नवीन आसन ग्रहण किया था। हमने तीन बार 'सद्गुरुनाथ महाराज की जय' का जयघोष करते हुए भगवान नित्यानन्द की पूजा का समापन किया !

फिर सूत्रधार डिनिस थॉमस ने हम सभी से कहा कि हम गुरुमाई जी के साथ सत्संग हेतु हॉल को पुनः व्यवस्थित करें। ऐसा लग रहा था मानो यह पूजा का ही एक निर्बाध और अखण्ड प्रवाह हो; हम

कुर्सियाँ लगा रहे थे, वाद्य-यन्त्र व्यवस्थित कर रहे थे, पूजा के नित-नवीन आलोक में माइक रख रहे थे, पूरे समय विस्मय और उत्साह के साथ एक-दूसरे की ओर देखते हुए।

हॉल को फिर से व्यवस्थित करने के दौरान, गुरुमाई जी एक खिड़की के पास गईं जिसके काँच पर बड़े बाबा की छवि बनी हुई थी। हो सकता है आपने सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर यह खिड़की देखी हो और साथ ही वह खिड़की भी जिस पर बाबा मुक्तानन्द की सुन्दर छवि अंकित है। ये खिड़कियाँ गुरुमाई जी के आसन के दोनों ओर बनी हुई हैं।

गुरुमाई जी ने देखा कि बाहर बड़े बाबा की खिड़की के ठीक नीचे एक सुनहरे रंग का केल का फूल खिला हुआ था, जिसे कैना लिली भी कहते हैं। उन्होंने कहा, "ऐसा लगता है कि वह फूल केवल बड़े बाबा के लिए खिल रहा है।" फिर गुरुमाई जी ने, बड़े बाबा की पूजा-वेदी के समक्ष हॉल में सामने की ओर अपना आसन ग्रहण किया। अब, सबसे पहली बार, श्री निलय में भगवान नित्यानन्द की मूर्ति के सान्निध्य में श्रीगुरुमाई के साथ सत्संग हो रहा था।

गुरुमाई जी ने कहा, "हम चारों ओर से सिद्धों से घिरे हैं।"

तत्क्षण, हम सबने हॉल में चारों ओर देखा और इस अनुभव को महसूस किया। बाद में कुछ प्रतिभागियों ने हमारे साथ बाँटा कि उनके लिए यह क्षण कैसा था।

> "मेरा मन श्रद्धा और आदर से भर गया। मुझे महसूस हुआ कि हम वास्तव में अपने चारों ओर सिद्धों के दर्शन की अनुभूति कर रहे हैं। मैं हॉल में उनके संरक्षण और उनकी उपस्थिति को पूर्णतः नवीन स्तर पर महसूस कर रहा था।"
>
> "ऐसा लग रहा था मानो हॉल में खिड़कियाँ और दीवारें हैं ही नहीं। वह अपरिमित हो गया था। मुझे महसूस हुआ कि मैं एक पर्वत-शिखर पर बैठा हूँ तथा चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश है।"

एक अन्य प्रतिभागी ने बताया कि उन्होंने अपने अन्तर में एक सम्पूर्ण विस्तार का अनुभव किया। उन्होंने बताया कि "मैं इसी बोध के साथ विश्व के बारे में चिन्तन करने लगी। मेरे हृदय के चारों ओर बनी दीवारें ढह गईं। मुझे लगता है कि मेरा बोध और भी अधिक विस्तृत हो गया है और मैं इस विस्तृत बोध के साथ इस संसार में रह सकती हूँ।"

अब हम आपको वैश्विक हॉल का सम्पूर्ण दृश्य दिखाते हैं। इस स्थान के हरेक पावन स्थल की यात्रा पर आप हमारे साथ आइए।

श्री निलय एक विस्तृत अण्डाकार ध्यान-हॉल है। दिन के समय यह विशाल झरोखे और बड़ी-बड़ी खिड़कियों से आ रहे सूर्य के प्रकाश में नहाया होता है और इन्हीं खिड़कियों से, बाहर स्थित बगीचों का मनोरम दृश्य दिखाई देता है।

हॉल के दक्षिण में गुरुमाई जी का आसन है जहाँ विराजमान होकर श्रीगुरुमाई ने अनगिनत बार सत्संग किए हैं — सिखावनियाँ प्रदान की हैं, नामसंकीर्तन किए हैं, ध्यान में हमारा मार्गदर्शन किया है और हमें दर्शन दिए हैं। इस हॉल में स्थित श्रीगुरुमाई के इस आसन की हम प्रतिदिन श्रीगुरु-शक्ति के आसन के रूप में आराधना करते हैं।

गुरुमाई जी के आसन के दोनों ओर दो बड़ी खिड़कियाँ हैं जिन पर बाबा मुक्तानन्द और बड़े बाबा जी की छवि बनी हुई है। गुरुमाई जी के आसन के ऊपर बाबा मुक्तानन्द की एक सेपिया पोर्ट्रेट लगी हुई है।

गुरुमाई जी के आसन से पश्चिम की ओर, घड़ी की सुई की दिशा में घूमने पर हमें उन सात सिद्धों की तस्वीरें दिखती हैं जिनसे बाबा मुक्तानन्द भारत की अपनी यात्राओं के दौरान मिले थे और जिनका वे बहुत आदर करते थे — रंग अवधूत महाराज, शिरडी के साईंबाबा, अक्कलकोट स्वामी, रणछोड़ बापू, हरिगिरि बाबा, ज़िप्रुअण्णा और सिद्धारूढ़ स्वामी।

उत्तर की ओर की दीवार पर शक्ति से झिलमिलाती हुई तीन पूजा-वेदियाँ हैं। प्रथम पूजावेदी बाबा मुक्तानन्द को समर्पित है। उसके पास, मध्य में बड़े बाबा का नवीन धाम है। और उसके दाईं ओर, दीवार पर भगवती महालक्ष्मी की पूजावेदी है।

हॉल में आगे बढ़ते हुए हमें श्री निलय का प्रवेश द्वार दिखाई देता है, जहाँ बाबा जी की एक तस्वीर है। और फिर पूर्व की दीवार पर सुन्दर तामपत्र हैं जिन पर श्रीगुरुगीता का सम्पूर्ण पाठ अंकित है।

निश्चित ही, चारों ओर कृपा है!

आइए अब अपने सत्संग पर वापस आते हैं। इस महान दिवस का सम्मान करने हेतु स्वामी ईश्वरानन्द ने एक विस्तृत अनुभव बाँटा जो उन्होंने पहले से तैयार किया हुआ था। हम सभी स्वामी जी को बड़े ध्यान से सुन रहे थे। अपने अनुभव के एक भाग के रूप में उन्होंने बड़े बाबा के चमत्कारों की दो कहानियाँ भी सुनाईं। यह सुनकर हमें सिद्धयोग के अपने एक प्रिय कोर्स की याद आ गई जिसका नाम था — "the Miracle Course" [द मिरेकल कोर्स]! यह कोर्स पहली बार जुलाई, १९९७ में आयोजित किया गया और फिर कई ग्रीष्म ऋतुओं में बड़े बाबा की पुण्यतिथि के सम्मान में आयोजित हुआ, उन आशीर्वादों के महोत्सव के रूप में, जो उनकी कृपा द्वारा पूरे विश्व को प्राप्त होता है। इस कोर्स में बड़े

बाबा के जीवन, उनकी सिखावनियों और उनकी उपस्थिति में घटित हुए कई चमत्कारों की अद्भुत कहानियाँ सुनाई गई थीं।

गुरुमाई जी के निर्देश पर सेवाकर्ताओं के कई समूहों ने पूरे भारत में भ्रमण कर ये कहानियाँ एकत्र की थीं। सेवाकर्ताओं ने उन लोगों से बात की जो बड़े बाबा के जीवन-काल में उनसे मिले थे और जिन्होंने स्वयं इन चमत्कारों का प्रत्यक्ष अनुभव किया था। या फिर कुछ लोगों ने ये कहानियाँ अपने माता-पिता से, परिवार के अन्य बड़े-बुज़ुर्गों से और यहाँ तक कि अपने पड़ोसियों से सुनी थीं।

जब स्वामी ईश्वरानन्द सुना रहे थे, तो हमें यही स्मरण हो रहा था कि कैसे बड़े बाबा की ये कहानियाँ कभी भी पुरानी नहीं लगती हैं। हम इन्हें सुनते हुए कभी नहीं थकते! हर बार जब एक चमत्कार की कहानी सुनाई जाती है तो उसमें एक नया ही रस घुला होता है। और जब उसे कोई दूसरा व्यक्ति सुनाता है तो ऐसा लगता है जैसे हमने इसे पहले कभी सुना ही नहीं है! हम जो बात यहाँ कहना चाहते हैं वह यह है कि भले ही बड़े बाबा के चमत्कार की ये कहानियाँ दशकों पहले की हैं, तथापि वे नित-नवीन हैं। *जय बड़े बाबा!*

स्वामी ईश्वरानन्द के अनुभव के बाद, स्वामी अखण्डानन्द ने गुरुमाई जी की कविता "एक मन्दिर निराकार" पढ़कर सुनाई, जो श्रीगुरुमाई ने वर्ष २०११ में बड़े बाबा की पुण्यतिथि की स्वर्णिम वर्षगाँठ के सम्मान में लिखी थी। यह गूढ़ कविता एक धारणा की तरह थी जो हमें गहरे ध्यान में ले गई।

कहीं दूर, अपने बोध की परिसीमाओं पर हमें चाइम्स और गॉन्ग की मृदुल ध्वनियाँ सुनाई दीं। समय और स्थान ने एक बार पुनः आकार धारण किया। हमने धीरे से अपनी आँखें खोलीं और हारमोनियम पर 'श्रीअवधूतस्तोत्रम्' के आरम्भिक स्वर सुने। 'श्रीअवधूतस्तोत्रम्' में भगवान नित्यानन्द की स्तुति की गई है और यह स्तोत्र उनकी पूर्णतः मुक्त अवस्था का वर्णन है।

कितनी सुन्दर परम्परा प्राप्त हुई है हमें सिद्धयोग पथ पर — हम संकीर्तन करते हैं और फिर थोड़ा और संकीर्तन करते हैं; हम पूजा करते हैं और फिर थोड़ी और पूजा करते हैं; हम आरती करते हैं और फिर थोड़ी और आरती करते हैं! यह सत्संग भी बिल्कुल ऐसा ही था।

हम बहुत खुश थे कि अब हम खड़े होकर गुरुमाई जी समक्ष ज्योत से ज्योत जगाओ आरती गाएँगे।

और जैसे ही हमें लगा कि सत्संग अब समाप्त होने वाला है तब गुरुमाई जी ने सिद्धयोग संगीत सेवाकर्ताओं से कुछ क्षणों के लिए बात की, जिन्हें 'ज्योत से ज्योत जगाओ' आरती का प्रारम्भिक संगीत बजाने में थोड़ी देर हो गई थी। गुरुमाई ने कहा, "केवल यन्त्रवत जीवन मत जिओ। यह निश्चित

करो कि हर पल को तुम्हारा पूरा-पूरा ध्यान मिले। हर पल सजीव है। इस तरह के महोत्सवों के दौरान, शक्ति की लहरें हिलोरें ले रही होती हैं, और इसलिए तुम्हें हर उठती लहर पर सवार होना सीखना होगा।"

यह कहते समय गुरुमाई जी ने अपने हाथों से विशालकाय समुद्री लहरों के उठने और गिरने का संकेत किया। यह *बहुत ही* सुन्दर था। गुरुमाई जी के शब्दों और उनके मन्त्रमुग्ध कर देने वाले संकेतों ने हमारा ध्यान आकर्षित कर लिया था।

तभी गुरुमाई जी "आनन्दाचे डोही आनन्द तरंग" अभंग की कुछ पंक्तियाँ गाने लगीं।

> आनन्द की महाबाढ़ में तरंगें उमड़ रही हैं,
> और वे भी आनन्द के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं,
> क्योंकि इस आनन्द-तत्त्व के रोम-रोम की प्रकृति आनन्द ही है।

हम सभी उनके साथ गाने लगे और तभी अतिशीघ्रता से शाम्भवी क्रिश्चन, जो सिद्धयोग संगीत की एक वरिष्ठ एवं अनुभवी सेवाकर्ता हैं, इस लहर पर सवार हो कार्यरत हो गईं। उन्होंने हारमोनियम लिया और इस अभंग की धुन बजाने लगीं।

हम सभी गुरुमाई जी के साथ ध्रुवपद गा रहे थे, और तभी वे अपने आसन से उठीं और हॉल में बीच के रास्ते पर चलने लगीं, चलते हुए वे लोगों को गाने के लिए प्रोत्साहित करती जा रही थीं। श्रीगुरुमाई बड़े बाबा की पूजावेदी तक आईं।

प्रणाम करने के बाद, गुरुमाई जी ने पीछे मुड़कर संगीत मण्डली को देखा और सुना कि अभी तक सब लोग ध्रुवपद ही दोहरा रहे थे! तो गुरुमाई जी वापस आईं और उन्होंने पहला पद गाना आरम्भ किया। शाम्भवी और वॉकर जॉन्स जो music conductor [म्यूज़िक कन्डक्टर] थे तुरन्त यह संकेत समझ गए। गुरुमाई जी बहुत प्रफुल्लित दिख रही थीं क्योंकि हम आगे गाए जाने वाले पदों की तरंगों पर सवार हो गए थे।

हम यह सुरमय अभंग गाते रहे और गुरुमाई जी श्री निलय के प्रवेश-द्वार के नज़दीक स्थित महालक्ष्मी की पूजा-वेदी की ओर बढ़ीं। परमोच्च प्रेम, सौन्दर्य और सुख-समृद्धि की देवी को पुष्प अर्पित करते हुए उनके समक्ष गुरुमाई जी ने गुलाब की पंखुड़ियों की वर्षा की।

अब हम आपको पिछले समय की, एक अन्य यात्रा पर ले जाना चाहते हैं। महालक्ष्मी की यह पेन्टिंग गुरुमाई जी के कहने पर नवम्बर १९८६ और फ़रवरी १९८७ के बीच गुरुदेव सिद्धपीठ में तैयार की गई।

उस समय अधिकांश सिद्धयोगी इस बात को लेकर दुविधा में थे कि आध्यात्मिक पथ का अनुसरण करने और पैसा कमाने व अपने सांसारिक उत्तरदायित्वों को पूरा करने के बीच सामंजस्य कैसे बिठाएँ। गुरुमाई जी सिखाती हैं कि व्यक्तिगत साधना और एक साधन-सम्पन्न जीवन जीना परस्पर विरोधी नहीं हैं। महालक्ष्मी जीवन के हर क्षेत्र में सम्पन्नता प्रदान करती हैं; वे भौतिक सम्पत्ति और आध्यात्मिक प्रज्ञान अर्थात् भुक्ति और मुक्ति दोनों ही प्रदान करती हैं। इसलिए गुरुमाई जी ने कहा कि यह पेन्टिंग बनवाई जाए और महालक्ष्मी पर आधारित एक कोर्स दिया जाए। पेन्टिंग बनकर तैयार होने के बाद, यह कोर्स पहली बार १९८७ की ग्रीष्म ऋतु में आयोजित हुआ। प्रतिभागियों ने भगवती महालक्ष्मी के कई स्वरूपों और गुणों के बारे में सीखा। उन्होंने मन्त्रोच्चार द्वारा, स्तोत्र गाकर तथा संकीर्तन द्वारा उनकी महिमागान करके, महालक्ष्मी की शक्ति का अपने अन्तर में आवाहन किया।

इस पेन्टिंग की चित्रकार, ऑस्ट्रेलिया की विख्यात पोर्ट्रेट पेन्टर थीं। जब गुरुमाई जी गुरुचौक में दर्शन देतीं तो वे प्रतिदिन वहाँ आतीं और *ख़ासकर* उस समय हर रोज़ आतीं जब उन्हें महालक्ष्मी के एक नवीन रूप को दर्शाना था। वे विनम्रतापूर्वक गुरुमाई जी से उस समय आने का आग्रह करतीं जब वे यह पेन्टिंग बना रही हों जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि वे गुरुमाई जी की महालक्ष्मी की परिकल्पना को पूर्णतः प्रस्तुत कर रही हैं। इस कारण गुरुमाई जी इस पेन्टिंग की एक-एक बारीकी में सम्मिलित थीं। गुरुमाई जी ने उन्हें निर्देश दिए और पेन्टिंग के कुछ भागों पर स्वयं भी कार्य किया।

इससे भी बड़ी बात यह है कि चित्रकार इस पेन्टिंग में गुरुमाई जी की झलक लाना चाहती थीं, उन्हें प्रतिबिम्बित करना चाहती थीं। चित्रकार के बहुत आग्रह करने पर, गुरुमाई जी ने उन्हें महालक्ष्मी के हस्त-कमलों को अपनी हथेलियों की तरह बनाने की अनुमति दी। शक्तिपुंज अभिलेख में हमें एक सिद्धयोगी का अनुभव मिला जो १९८७ में गुरुदेव सिद्धपीठ में थे और जिन्होंने पेन्टिंग पूरी होने पर उसे देखा था। उन्होंने बताया, "जब मैंने पहली बार महालक्ष्मी की सुन्दर दाईं हथेली से स्वर्ण मुद्राएँ बरसती देखीं तो मुझे एक नवीन व्यापकता का अनुभव हुआ; मुझे एहसास हुआ कि मैं एक सुखी जीवन भी जी सकता हूँ और साधना भी कर सकता हूँ।"

चित्रकार का अपना अनुभव भी शक्तिपुंज में संग्रहित है। वे बताती हैं कि हर शाम जब गुरुमाई जी गुरुदेव सिद्धपीठ में टहलने के लिए निकलतीं तब वे गुरुमाई जी को खिड़की से देखती रहतीं, इससे उन्हें अनन्त प्रेरणा मिलती। भगवती महालक्ष्मी ने अपने बाएँ हाथ में जो गुलाब का फूल पकड़ा है, वह गुरुमाई जी के हाथ में उसी गुलाब के फूल से प्रेरित है। महालक्ष्मी का जो दीप्तिमान मुकुट है वह गुरुमाई जी की गेरुई-गुलाबी रंग की टोपी से प्रेरित है जो गुरुमाई जी उस समय पहना करती थीं। जब श्री निलय, श्री मुक्तानन्द आश्रम का मुख्य सत्संग-हॉल हुआ करता था तभी से देवी का यह अद्भुत

स्वरूप और उनकी पूजावेदी इस पावन-स्थल पर शोभायमान है और देवी की कृपादृष्टि से परिपूर्ण है तथा बाद में यह सिद्धयोग वैश्विक हॉल बन गया है।

स्मरण करें, कैसे श्रीगुरुमाई ने कहा था कि श्री निलय में, इस वैश्विक हॉल में हम चारों ओर से सिद्धों से घिरे हैं? भगवान नित्यानन्द की मूर्ति की पुनर्स्थापना से; श्री निलय में बड़े बाबा की उपस्थिति से हम सचमुच कृपा द्वारा चारों ओर से घिरे हैं। हमारी साधना श्रीगुरु की सिखावनियों से समृद्ध है। हमारा जीवन उनकी कृपा व आशीर्वादों से आच्छादित है। वैश्विक हॉल एक मण्डल बन गया है, दिव्य-शक्ति का मण्डल जिसके मध्य में श्रीगुरु की शक्ति विराजमान है।

हमें आशा है कि इस वृत्तान्त के माध्यम से, आपने पिछले समय की पूर्व स्मृतियों की हमारी यात्राओं से कुछ नया सीखा है और आप इस अभूतपूर्व दिवस का रसास्वादन कर पाए हैं।

भगवान नित्यानन्द की मधुरतम शक्ति आपकी जाग्रत, स्वप्न व सुषुप्तावस्था में प्रवाहित होती रहे जिससे आप अनन्त आनन्द में स्नान करते रहें।

बाबा मुक्तानन्द का संकल्प कि साधकों को हर स्थान पर गुरु-दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी शक्ति की जागृति प्राप्त हो, पूर्ण रूप से फलित हो, जिससे यह जगत मुक्ति के आनन्द के ज्ञाताओं से भर जाए।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द की कृपा व सिखावनियाँ, विश्वभर के साधकों को चिति के विलास के आनन्द का अनुभव प्रदान करें। ऐसी मंगलकामनाएँ।

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।